उद्गार

काँटो पे बन के फूल
मुस्कराना चाहिए
मरघट में बैठ गीत खुशी
का गाना चाहिए

वेद प्रकाश आर्य
157, राजपुर रोड, देहरादून 248009

संस्थापक : मानव कल्याण केन्द्र
कुलपति : द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल
दूरभाष 2734569
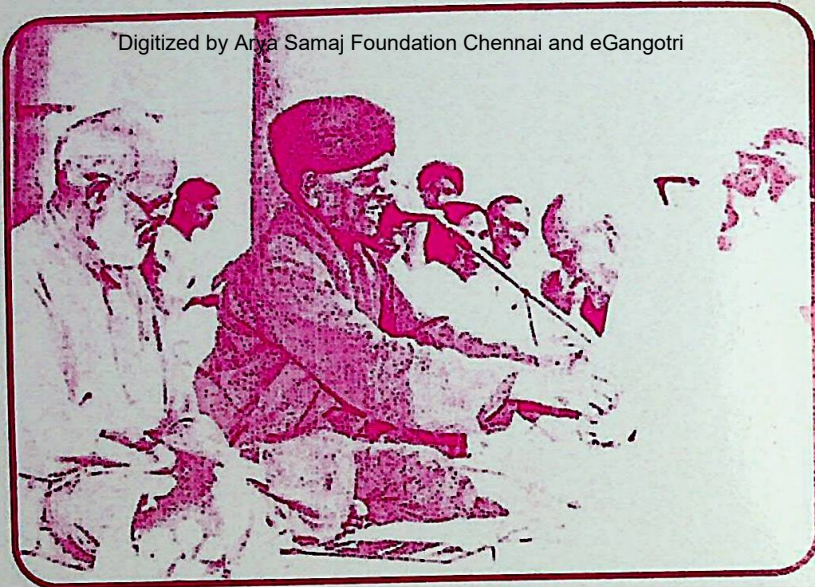
ओ३म्

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक ने डा० वेद प्रकाश (संस्थापक) को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी तथा अनेक अन्य विद्वानों की उपस्थिति में 25 मई 2001 को वानप्रस्थ में दीक्षित किया।

धर्मपत्नी कंचन गुप्ता

मेरी प्रेरणा

मेरी चाहत इबादत में
ढल गयी है।
वफाओं ने तराश के
तुझे बुते खुदा
बना दिया है।

"तलाश"

जर्रे जर्रे से पूछा तेरा मका
चांद तारों से पूछा तेरा जहां
सागर के छोर से पुकारा तुझे
हिमालय की चोटी से ललकारा तुझे

न पाया पता तो मन को टटोला
मैं यहां छुपा हूँ वह चुपके से बोला

वेद प्रकाश आर्य

समर्पण

अपना सब कुछ दे दिया - तूने दिया सो ले लिया
चरणामृत या विष दिया अमृत समझ के पी लिया

जिसको तेरी
''ज्योति का प्रकाश मिल गया
धरा मिल गई उसे आकाश मिल गया''

जिस को तेरी ज्योति का प्रकाश मिल गया
धरा मिल गई उसे आकाश मिल गया

ज्योति से मिली ज्योति तो आनन्द हो गया
विलीन हो के तुझ में परमानन्द हो गया

सुखों का भण्डार अनायास मिल गया
धरा मिल गई उसे आकाश मिल गया

विवेक से पूजा तो वह ज्ञान हो गया
मूर्ख कालिदास भी महान हो गया

कमल बन कर जीने का विश्वास मिल गया
धरा मिल गई उसे आकाश मिल गया

पत्थर का था जीवन वह हीरा बन गया
तोरी का था खोल वह मंजीरा बन गया

गीता का वेदों का सारांश मिल गया
धरा मिल गई उसे आकाश मिल गया

पानी की इक बूंद से वह स्वाती बन गया
काम मोह का जीत कर प्रतापी बन गया

सांझ ढल गई उसे प्रभात मिल गया
धरा मिल गई उसे आकाश मिल गया

दीपक के नीचे अंधेरे छिपे हैं, अन्धेरों के पीछे सवेरे छुपे हैं

Brahmcharya is search of Brahma
Brahma pervades every being
Can therefore be searched by
Divining into your ownself
But this realisation is not
Possible without the

Control of Thoughts
Words & Actions

जीवन से जीवन की जीवन ज्योत जलेगी

आराधना

भोर की किरणें बटोरे

भोर की किरणें बटोरे कर रहा आराधना

त्याग और तप से संजोकर कर रहा मैं साधना

ज्ञान की थाली में रख कर दीप कर्मों का जलाया

मन मन्दिर के पाट खोले शीश चरणों में झुकाया

रोम रोम से ओ३म् की मैं कर रहा उपासना

भोर की किरणें बटोरे कर रहा आराधना

अपना सब कुछ दे दिया तूने दिया सो ले लिया

चरणामृत या विष दिया अमृत समझ कर पी लिया

मैं भला या हूँ बुरा स्वीकारो मेरी प्रार्थना

भोर की किरणों से तेरी कर रहा आराधना

भोर की किरणें बटोरे कर रहा आराधना

सच्चाई ही धर्म है – *Truth is the highest religion*

हे प्रभु इस जीवंन को

जीने का कुछ अर्थ दे दो

हे प्रभु इस जीवन को

संघर्ष का सामर्थ्य दे दो

हे प्रभु इस जीवन को

आर्ष का आर्यत्व दे दो

हे प्रभु इस जीवन को

समर्पण का अमरत्व दे दो

शहद से पुते हुए व्यक्ति को मधु मक्खियाँ नहीं काटती
सुशील और ऊँचा जीवन सबकी भलाई चाहता है।

रोते हुए आए थे हंसते हुए जाना है

रोते हुए आए थे – हंसते हुए जाना है
रोतों को हंसाना है – गिरतों को उठाना है

तुम धर्म भी करते रहो – तुम कर्म भी करते रहो
असुरों से लड़ते रहो – और ईश से डरते रहो

न कुछ ले आए थे – न साथ ही ले जाना है
रोते हुए आए थे – हंसते हुए जाना है

जीवन यह होम बने – हर मानव सौम्यं बने
खुशियां जो बिखेरोगे – खुशियां ही बटोरोगे

फूलों पर कांटो पर – बढ़ते ही जाना है
रोते हुए आए थे – हंसते हुए जाना है

क्यों शंख बजाना है – क्यों भोग लगाना है
दुःखियों की करो सेवा – जो ईश रिझाना है

सन्देश यह वेदों का – घर घर में सुनाना है
रोते हुए आए थे – हंसते हुए जाना है
रोतों को हंसाना है – गिरतों को उठाना है

पाप करना अथवा पाप सहन करना एक है।

गुलों का खिलना

महकना और मुरझाना

ज़िन्दगी का नाप है

बचपन की अटखेलियां

जवानी की मदहोशी

बुढ़ापे का संताप है

न आने का पता

न जाने का पता

बता दो यह ज़िन्दगी – पुण्य है या पाप है।

अभी तो बहुत कुछ है सरे अंजाम देने को
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

भुला के तुझे

भुला के तुझे मैंने – यह क्या किया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
मन मन्दिर की ज्योति जलाई नहीं
चांदनी सा यह जीवन तमस कर लिया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
ना किया धर्म ही ना किया कर्म ही
बन के पशु – चार दिन जी लिया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
हीरों का जीवन – क्यों पत्थर भया
प्रतिशोध में तू क्यों जल गया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
जिन्दगी भर भंवर में रहे घूमते
खोल पिंजड़ा – वह पक्षी कहाँ उड़ गया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
भोगते भोगते भोग यूँ ही कट गई
लाखों का जीवन – यूँ ही बिक गया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
मदहोशी में काटी यह लम्बी उमर
होश आया तो देखा गजब हो गया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
पाप और पुण्य में ना जाना फरक
यूँ मरने से पहले कफन सी लिया
पीना था अमृत – जहर पी लिया
क्यों मरने से पहले ना टूटा भरम
जिस घर पर गुमां था वही जल गया
पीना था अमृत – जहर पी लिया

यदि सुखी होना चाहते हो तो विषयों को विष समझ कर छोड़ दो

निष्ठुर जग के निष्ठुर पथ पर
कितने पग चलना बाकी
पी पी कर कितने प्याले
मधु के विष के पी डाले
यह निष्ठुर अम्बर यह बादल काले
यह पथ की दूरी यह पग के छाले
साहस साथी – मैं एकाकी
निष्ठुर जग के निष्ठुर पथ पर
कितने पग चलना बाकी

गुंलों की खुशबू फैलती है गुल्स्तानों में
मानव की खुशबू फैलती है आसमानों में

भक्ति का दे दो दान

भक्ति का दे दो दान मुझे
शक्ति का वरदान
तुझे भुला के देखो – कितना भटक रहा इंसान
कितना भटक रहा इंसान

पूजा की थाली में
जला दो दीपज्ञान का
मानवता की वीणा दे दो
दिल दो इंसान का
निर्भय हो मेरा जीवन – दे दो आत्म सम्मान
कितना भटक रहा इंसान

भक्ति का दे दो दान मुझे
शक्ति का वरदान

आर्यवर्त का रहने वाला
आर्यधर्म आर्यत्व का पुजारी
गंगा जल का प्यासा हूँ
मैं सत्य का भिखारी
कर्म हैं मेरा पूजा स्थल
धर्म ही मेरा धाम
कितना भटक रहा इंसान
भक्ति का दे दो दान मुझे
शक्ति का वरदान
भटक रहा इंसान – कितना भटक रहा इंसान

सत्य ही धर्म है – *Truth is the highest religion*

आँख खुली या बन्द भई
तेरे ही दर्शन करते हैं
हर सांस तेरा गुणगान करें
सब तुझ को अर्पित करते हैं
आँख खुली या बन्द भई – तेरे ही दर्शन करते हैं
तमस में उजियारे में
तुम को याद करते हैं
आँख खुली या बन्द भई
तेरे ही दर्शन करते हैं
तेरी लीला में लीन भये
न रोते हैं न डरते हैं
आँख खुली या बन्द भई
तेरे ही दर्शन करते हैं

ईश्वर करे हम उत्साह को ही अपना जीवन साथी बनाए

कारा - अन्धियारा

टारो कारा अन्धियारा – प्रभु जी
सब को दो उजियारा – प्रभु जी
ढल जाए यह काली रात
हर सू हो उज्वल प्रभात

सब को मिले किनारा – प्रभु जी
सब को दो उजियारा – प्रभु जी
टारो कारा अन्धियारा – प्रभु जी

मानव मानव को प्यार करे
अधर्म का यह संहार करे
विश्व बने यह प्यारा प्यारा
टारो कारा अन्धियारा – प्रभु जी

सब को दो आशा विश्वास
भूख मिटे मिट जाए प्यास
मनुर्भव का दे दो नारा
सब को मिले किनारा – प्रभु जी

संघर्ष का मुझे सामर्थ्य दे दो
जीने का कुछ अर्थ दे दो
तेरा ही मुझे सहारा – प्रभु जी
टारो कारा अन्धियारा – प्रभु जी

ए मौत न झांक मेरे दरो दीवार पे मेरी हर ईंट पे लिखा है लफजे "जिन्दगी"

जितना प्यार किया इस तन से

उससे प्यार किया होता

सागर में गोते न खाते

भव सागर पार किया होता

आसमां के छोर का कुछ पता मिलता नहीं

कहां लिखूं खत तुझे – तेरा पता मिलता नहीं

तू भी यज्ञ रचा ले

प्रभु ने यज्ञ रचाया – तू भी यज्ञ रचा ले
यज्ञ की राख रमा ले जन्मों की मेल हटा ले

अमृत बेला में कर ले ध्यान
यज्ञ का तू बन जा यजमान

ओ३म ओ३म की छेड़ों तान
इदन्नमम का गा लो गाना

मोक्ष मार्ग को पा ले – तू भी यज्ञ रचा ले

गायत्री की फेरो माला
अन्तकर्ण से बोलो स्वाहा

तीन घूंट (आचमन) से शुद्ध हो जाओं
अंग स्पर्श से पुष्ट हो जाओं

दे सोना कुन्दन पा ले – तू भी यज्ञ रचा ले

जो बोया हंस हंस कर काटो
जो पाया हंस हंस कर बाँटो

न लाए न ले जाना है
खाली आए खाली जाना है

यज्ञमय हो यह चक्र छुड़ा ले – तू भी यज्ञ रचा ले

सावधान : तुम जीवन की प्रत्येक घड़ी में अपने भविष्य को स्वयं ही बना रहे हो

मैं तप हूँ तपस्या हूँ या बलिदान
अंजान हूँ अज्ञान हूँ या पहचान
धूल हूँ, आँधी हूँ या तूफान
सत्य या मिथ्या हूँ या हूँ अनुमान
आदम हूँ, देव हूँ या शैतान
वे धरा हैं, पाताल हैं, और आसमान
देवों का देव है वह मेरा भगवान
पूर्ण सम्पूर्ण सर्वस्व धर्म व ईमान
मेरा देव भी इष्ट भी वह मेरा भगवान

कूच से पहले सभी सामां कर लिया है
मलकुल मौत को भी दावते शीरां कर लिया है

होते हैं दीदार

ज्योत जले जब मन की – होश रहे न तन की
होते है दीदार – दाता होते है दीदार
दे दे अब दीदार – ओ मेरे करतार

मोक्ष मार्ग को बगिया मोड़ी
सुख दु:ख की हर सीमा छोड़ी
मान अभिमान का नाता छूटा
सत्य ज्ञान का अंकुर फूटा
तेरी लीला अपरम्पार – दाता, तू मेरा करतार
होते है दीदार – ओ मेरे दातार – दाता होते है दीदार

छोड़ के सब मोह माया
मैं तेरी शरण में आया
झूठे रिश्ते तोड़े
ज्ञान से नाते जोड़े
लग गई नौका – पार – दाता
होते हैं दीदार – ओ मेरे दातार – दाता होते हैं दीदार

आवागमन का पाया पार
पंच तत्वों का समझा सार
सूक्ष्म से सूक्ष्म को जोड़ा
परम पिता से नाता जोड़ा
हो गए भव से पार – दाता – होते हैं दीदार
होते हैं दीदार – ओ मेरे दातार – दाता होते हैं दीदार

सत्यज्ञान की लागी लगन
ईश विनय में हो के मगन
सपने हुए साकार दाता
होते हैं दीदार – दाता – ओ मेरे दातार – होते हैं दीदार

जी से जी कह कर आपस में पुकारने वालों के जी मिल जाते हैं

ओ३म् जपो ओ३म जपो
ओ३म् जपो ओ३म जपो
ओ३म् ही मेरा इष्ट है
ओ३म् ही मेरा धाम
कान्हा मेरा ओ३म है
ओ३म् ही मेरा राम
ध्यान करो तुम ओ३म् का
सिमरन ओ३म् का करो
ओ३म् जपो ओ३म जपो
ओ३म् जपो ओ३म

लिबास तक ही महदूद था सफेद रंग
अब यह कमबख़्त खूं में भी आ गया है

ईश को रिझा लिया

दिल में उसे बिठा लिया
कदमों में सर झुका दिया

आनन्द परमानन्द से
बे मोल मैंने पा लिया
ईश को रिझा लिया

इदन्नमम् की ज्योत जलाई
आसक्ति की ज्योत बुझाई
आसक्ति से पाई विदाई
जीवन भर की यहीं कमाई
दे दी उसने सारी खुदाई
बिन खोए सब पा लिया

झूठे नाते तोड़ लिए हैं
सत्य से नाते जोड़ लिए हैं

वैराग्य का पहना बाना
छूट गया आना जाना

आनन्द कुबेर पा लिया
ईश को रिझा लिया
बिन खोए सब पा लिया

चरणों में सर झुका दिया
आनन्द परमानन्द से
बे मोल मैंने पा लिया

बुद्धि करने योग्य काम जानती है —चतुराई उसे करना जानती है।

काहे भस्म लगाई रे बाबा
काहे धूनी रमाई
कण कण में रमता राम तिहारा
बाह्य तमस अन्दर उजियारा
भ्रम ही भ्रम में क्यूँ भरमाई
काहे भस्म लगाई............
झांकत झांकत क्या झांका रे
झांकी झांको मन मन्दिर की
अन्दर के पट खोल के देखो
अद्भुत ज़्योत जलाई रे बाबा
काहे धूनी रमाई रे बाबा
काहे भस्म लगाई

बिना तेल जल जाएगी बाती भी
बिना नक्षत्र बने न मोती स्वाति भी

ओ३म् नाम तेरा सब से प्यारा

ओ३म् नाम तेरा सब से प्यारा
ओ३म् नाम तेरा सब से न्यारा
ओ३म् है उद्घोष तेरा
ओ३म् है जयकारा
ओ३म् नाम तेरा सबसे प्यारा

रोम रोम में जब ओ३म् बसेगा
मोह माया को तभी तजेगा
ज्ञान के चक्षु खुल जाएगें
जो माँगेगें सो पाएंगे
ओ३म् ही दातारा
उसका बड़ा भंडारा – दाता वही दातारा

ओ३म् ओ३म जपते रहो
ओ३म् ओ३म रमते रहो
ओ३म् की नौका कभी न डोले
ओ३म् है पतवारा
ओ३म् नाम तेरा सबसे प्यारा

ओ३म् नाम तेरा सबसे प्यारा
ओ३म् नाम तेरा सबसे न्यारा
ओ३म् है उद्घोष तेरा
ओ३म् है जयकारा

ओ३म् की महिमा न्यारी है
जीवन की फुलवारी है
रंग रंग के फूल खिलेंगें
(सुगन्ध भरे फूल खिलेंगें)
फूलों की यह क्यारी है
ओ३म् ही दातारा है
ओ३म् तेरा जयकारा है

ओ३म् का जो जप करेगा
ओ३म् उसके कष्ट हरेगा
मन मन्दिर की ज्योत हैं ओ३म्
इस ओ३म् में छिपे हैं सोम
सोम पिता मातारा
ओ३म् तेरा जयकारा

हमने न भोगे भोग – भोगों ने हमें भुगता दिया

कोई नहीं सूँघता फूलों को मुरझाने के बाद
झूठे नाते छोड़ दो - दुनिया से मुख मोड़ लो

उस नाव के लिए वायु कभी
अनुकूल नहीं होती जिसको
अपने लक्ष्य का ज्ञान न हो

संगठन शक्ति है - देश सेवा भक्ति है

आओ पैर पखारें

मन मन्दिर के देव के
आओ पैर पखारें
बाहर के नैना बन्द करें
भीतर के नैन उजारें
आओ पैर पखारें

निराकार साकार कर लें
सच्चिदानन्द पुकारें
आओ पैर पखारें

ओ३म्कार में ओ३म् को देखें
पल पल उसे निहारें
आओ पैर पखारें

गायत्री की महिमा अद्भुत
सर्वरक्षक गुंजारें
आओ पैर पखारें

सुख और दुःख है एक समाना
जो भी दे स्वीकारें
आओ पैर पखारें

कुवृत्तियों की अब हो पतझड़
वृत्तियों की बहारें
आओ पैर पखारें
यम से यम वशीभूत कर लो
आवागमन नकारें
आओ पैर पखारें

जननी जन्म भूमि का प्यार सबसे बड़ा प्यार है देश पूजा ही सबसे बड़ी पूजा है

"ओस गिरी सो गिर गई
कलियन का मुंह धोये
गर पूंछे आंसू दुःखियन के
शबनम मोती होय"

सत रंग सफेदी में छिपे
नैना देख न पाए
अन्दर बाहर बसे रसैया
भक्ति बिन दीख ना पाए

शिष्टाचार शारीरिक सुन्दरता की कमी को पूरा कर देता है।

प्रभु चरणों में

रवि की उज्ज्वल किरन बनके जीना चाहता हूँ

तेरे अमृत कलश की इक बूंद पीना चाहता हूँ

मैं तो तू तू मैं हो जाएं

समर्पण का अमरत्व बन जीना चाहता हूँ

ओ सागर भर दे मेरी गागर

ज्ञान गंगा में नहाना चाहता हूँ

आनन्द से उठकर परमानन्द हो जाऊँ

इंसान हूँ भगवान बन जीना चाहता हूँ

आया तन्हा तन्हा जी रहा हूँ

तन्हा तन्हाइयों में जीना चाहता हूँ

जीने का कुछ अर्थ दे दो

संघर्ष का सामर्थ्य दे दो

आर्ष का आर्यत्व दे दो

समर्पण का अमृत्व दे दो

Go direct in the direciton - You are directed By the internal director

Nothing is certain but death

"जिन्दगी और मौत में फासला ही नहीं है
शमां से जल रहे थे – धुआं हो गए हैं।

"जिन्दगी और मौत में फासला है जिन्दगी का
ज़िन्दगी–ज़िन्दगी से लड़ती रही जिन्दगी भर"

"ए मौत न झांक मेरे दरो दीवार पे
मेरी हर ईंट पर लिखा है लफ्ज़े "जिन्दगी"

"गर मौत नहीं होती
तो यह जिन्दगी
मौत बन गई होती"
जिन्दगी मौत से जिन्दा है
यहीं जमीन है यही आसमां है

कष्टों से जीवन को तपाना चाहिए

फूलों की तरह कांटों पे मुस्कुराना चाहिए
मरघट में भी गीत खुशी का गाना चाहिए

लालिमा से भोर की नहाना चाहिए
अमावस में बनके जुगनु टिमटिमाना चाहिए

गर्जो को छोड़ फर्ज़ को निभाना चाहिए
कष्टों से जीवन को तपाना चाहिए

रक्त की इक इक बूंद देश पर लुटाना चाहिए
लावारिस लाशों पर भी कफन चढाना चाहिए

तमस में बन के दीप जगमगाना चाहिए
मौत की आहट पर हँसना हँसाना चाहिए

रोके लाख जमाना आगे बढ़ते जाना चाहिए
घोर विपदा में भी न घबराना चाहिए

तूफानों में आशा दीप जलाना चाहिए
निराशाओं को जीवन से भगाना चाहिए

अमावस में बनके जुगनु................

चालाकी को समझो–चालाकी में फसों मत – किसी से चालाकी मत करों

"A Leader must he a Nationalist"

"Every Citizen should be a Policeman"

"Every Policeman should be a Citizen"

"When I slept I found that

world is beauty

When I got up I found that"

world in duty

Your faith shall be in such

a leader who has faith in himself.

Any Fool can criticize.
Criticism wounds man's precious pride.

टंकारा

इस धरती के कण–कण को करलो तुम प्रणाम
जन्मस्थली दयानन्द की है, ये हैं चारों धाम–3। इस धरती........

इस माटी की गोदी में दयानन्द थे खेलें
अब इस धरती पर लगते हैं आर्यों के मेले – 2
गूँज रहा है चारों ओर वेदों का गुणगान। इस धरती.......

इस मन्दिर के शिवलिंग ने ऐसा चक्र चलाया
छोड़ दिया घर बार शंकर दयानन्द कहलाया
सत्य अर्थ समझा गया दिया वेदों का ज्ञान। इस धरती.......

टंकारा ललकारा देता आज दुहाई
जागो–2 आर्यों भारत पर विपदा आई
समझाया दयानन्द ने मेरे गुण न गाना
शस्त्र शास्त्र से लैस हो भारत की लाज बचाना
आर्यों इन असुरों का करदो काम तमाम। इस धरती.......

घूस का कैंसर चाट गया कर दिया देश का नाश
बचाऐंगें इस देश को गुरूकुल आर्य समाज
इक इक बूंद खून की करदो तुम कुर्बान। इस धरती.......

मेरा रंग दे बसन्ति चोला अब ऐसा गीत गालो
लेखराम श्रद्धानन्द बन सीने में गोली खालो
बन भगतसिंह और लाजपत, रखलो भारत की आन। इस धरती.......

कहीं टेरेसा कहीं पोप धर्मान्तरण का तूफान
आर्यजगत ना जागा तो बनेगा पाकिस्तान फिर से –3
सत्य अर्थ समझा दो तुम दे दो वेदों का ज्ञान। इस धरती.......

Fear is Sin-Sin is a weakness and weakness is death.

ए देने वाले मुझे सब्र की दौलत दे दो
क्या करूंगा लेकर तेरी सारी खुदाई

दुःखों के बिना जीवन में चमक आती नहीं
सुख में क्यों दुनियां गीत तेरे गाती नहीं

दुःख और सुख में इमत्याज न कर
दोनों के लिए निकल जाते है आंसु

कल शैतान का दूत है

दुःख सुख

दुःखों से भीगी तेरी चदरिया
सुखों का बिछौना है।
जल जल खोट जले जब सारे
कुन्दन भया जो सोना है।
दुःखों से ....

धूप छाँव है जीवन तेरा
कभी हंसना कभी रोना है
बाती से तेल जले दीपक का
कुछ पाना कुछ खोना है
दुःखों ....

कांटो बिन सुमन नहीं खिलते
लेखों को कर्मों से धोना है
उसके हाथों में डोरी तेरी
उपजेगा वही जो बोना है
दुःखों से ....

सुख में सिमरण करे रे भाई
फिर काहे का रोना है
ऐसा सुन्दर नर तन पाकर
बेमोल उसे क्यों खोना है
क्यों माटी में खोना है
दुःखों से भीगी तेरी चदरिया
सुखों का बिछौना है।

पाप करना अथवा पाप सहना एक समान है।

लम्हें जिन्दगी के भले खत्म हो पाएं
होठों की मुस्कान कभी खत्म न हो
फूलों की तरह बिखरें मुस्कराहटे
इन्सानियत के गुलिस्तान कभी खत्म न हो
अपने लिए तो सारा जहां जी रहा है
गैरों के निगहबां कभी खत्म न हो
दयानन्द की तरह जहर पीने वाले
दीन दुखियों के महरबां कभी खत्म न हो।

शक्ति के विश्वास में ही शक्ति है।

पुकारूँ किस नाम से

तुझे मैं पुकारूं किस नाम से

तेरे पास आऊं – मैं किस नाम से

तेरे मेरे रिश्तों का क्या नाम है

मैं पुजारी तेरा नादान हूँ

मैं तेरा पुजारी तेरे दर का भिखारी

तुझे मैं पुकारूं किस नाम से ....

नामों में तेरा नाम ओंकार है

मैं साकार हूँ तू निराकार है

तुझे भोग लगाना तेरा अपमान है

तू तो विश्व का पालनहार है

नामों में तेरा नाम ओंकार है

अब रात की करो न बात बात करो प्रभात की

आन बनके जी तू सम्मान बनके जी

आन बनके जी तू सम्मान बनके जी
ऋषियों के वेदों का ज्ञान बनके जी
देश और धर्म की शान बनके जी
इन्सान बनके जी ईमान बनके जी

हंसकर संघर्ष कर – मुस्कान बनके जी
छा जा अर्श पर फर्श पर आसमान बनके जी
फूल हो या शूल तू समान बनके जी
आर्य और आर्यत्व की पहचान बनके जी
आन बनके जी तू सम्मान बनके जी

मानवता का शांति का आह्वान बनके जी
दु:खी बेबसों का पासवान बनके जी
सत्य और क्रांति का सम्मान बनके जी
ऋषि दयानन्द का एलान बनके जी

पटेल और सुभाष की तू आन बनके जी
शिवा और प्रताप की तू शान बनके जी
भगत सिंह और आजाद का वरदान बनके जी
गुरू पुत्र और हकीकत का सम्मान बनके जी

सोने की चिड़िया का निगहबान बनके जी
भारत की तू वीर संतान बनके जी
आन बनके जी तू सम्मान बनके जी
ऋषियों के वेदों का ज्ञान बनके जी

कुर्सियों का चक्रव्यूह

कुर्सियों के चक्रव्यूह से आज देश धसा – धंसा धंसा जा रहा है
शकुनी की गोटियों में देश फंसा – फंसा जा रहा है
इस देश को बचाने कृष्ण भगवान आ जाओ
सोए शेर को जगाने मेरे तुम राम आ जाओ

दु:शासन ने फिर से मानवता के चीर हरण की ठान ली है
हस्तिनापुर को खण्ड करने की बात पितामाह ने मान ली है
कटा के जटाएं गुरू ने वोटों का मुकुट पहन लिया है
इन्द्रप्रस्थ के चाँद को स्वार्थ ने गहन लिया है
पंथ और मजहबी असुरों से देश कटा कटा–कटा जा रहा है।

धृतराष्ट्र की ज्योति जगाने अब मेरे भगवान आ जाओ
गन्धारी की पट्टी हटाने अब मेरे तुम राम आ जाओ
विवेक और कर्म की नौका के हम राही थे
पूर्व से जन्मी पंचशील की राह के हम राही थे

तेरी बासुंरी के बिना गौओं ने दूध सोख लिया है
मानवता को नग्न कर असुरों ने छुरा घोंप दिया है
अलगाव वाद की चोखट पर – क्यों देश ठगा – ठगा ठगा जा रहा है
चक्र सुदर्शन चलाने अब मेरे भगवान आ जाओ

इस देश को तबाही से बचाने अब मेरे तुम राम आ जाओ
पापों का घड़ा इस कदर भरा है – दुर्योधन और कंसों से भर गई धरा है
कौन सी डगर थी – किस ओर चल पड़े हैं
पूर्व के हम राही – पश्चिम को बढ़ चले हैं
भौतिकता की बिजलयों से क्यों देश जला – जला जला जा रहा है
द्रोपदी की लाज बचाने कृष्ण भगवान आ जाओ – पाप को मिटाने मेरे तुम राम आ जाओ

दयानन्द के अनुयायी कहाँ हैं -कहाँ है?

निजाम को घुटनों के बल झुका दिया जिन्होंने,
सत्य के प्रकाश को बचा लिया जिन्होंने,
विधवाओं को सुहाग लौटा दिये जिन्होंने,
सतियों को सत्य का पथ दिखा दिया जिन्होंने,
मातृ शक्ति को क – ख पढ़ा दिये जिन्होंने,
वे दयानन्द के सिपाही कहाँ हैं, कहाँ हैं?
वे दयानन्द के अनुयायी कहाँ हैं, कहाँ हैं?

कट्टर पंथियों का शोषण मिटा दिया जिन्होंने
ब्राह्मणों को ब्रह्म मार्ग दिखा दिया जिन्होंने
जन–जन में राष्ट्र भाव जगा दिया जिन्होंने
शुद्धि से भेद भाव मिटा दिया जिन्होंने
सत्य क्या है तर्क से समझा दिया जिन्होंने
वे दयानन्द के सिपाही कहाँ हैं, कहाँ हैं?
वे दयानन्द के अनुयायी कहाँ हैं, कहाँ हैं?

इस देश का दीपक फिर टिमटिमानें लगा है
अलगाववाद का तूफान इसे बुझाने लगा है
कुचक्र कुर्सियों का देश मिटाने लगा है
विदेशी पूँजीवेश इसे डगमगाने लगा है
घूस का कैंसर चमन को जलाने लगा है
वे दयानन्द के सिपाही कहाँ हैं, कहाँ हैं?
वे दयानन्द के अनुयायी कहाँ हैं, कहाँ हैं?

अब बनो हवन की आग–शांतिमय क्रांति करनी है
असुरो का शोणित पीने को क्रांति से शांति करनी है
आर्यो का है आर्यव्रत–दूर यह भ्रांति करनी है
माँ मांग रही बलिदान–खूँ से वेदी रंगनी है
कृणवन्तु विश्व आर्यम् की अब तो पूनी कतनी है
वे दयानन्द के सिपाही कहाँ हैं, कहाँ हैं?
वे दयानन्द के अनुयायी कहाँ हैं, कहाँ हैं?

"आग बनो और आग लगा दो"

पापों की यह भरी नगरिया–पथिक चला है कठिन डगरिया।
अमावस की इस अन्ध्यारी में – जुग की उस चिंगारी ने।
अंधकार पर वज्र गिराया – जीवन पथ को है दर्शाया।
भव सागर है घोर निशा है – नौका तेरी और दिशा है।।
जग भूला है राह दिखा दो
आग बनो और आग लगा दो।।

निराशाओं के झोंके आए – आशाओं के दीप बुझाएं।
आशा दीप जला लेना – तू सोए भाग जगा लेना।।
परवाने है जलने आए – जीने को है मरने आए।
यह सन्देश परवानों को – सुलग रहे इन अरमानों का।।
सागर शोणत का बहा दो।
आग बनो और आग लगा दो।

कालिमा को बढ़ते देखो – सूर्य उदय था ढलते देखो।
शमशानों में शोर हुआ है – टूप घटा घट घौर हुआ है।
शमशानों में ज्वाला धधकी – सत्य की शव है जलते देखो।
सूर्य उदय था ढलते देखो – कालिमा को बढ़ते देखो।।
अन्तर ज्वाला को भड़का लो
आग बनो और आग लगा दो

सतलुज के किनारे देखो – सुलग रहे अंगारे देखो।
अरमानों की राख बनी है – दीवानों की याद बनी है।
नभ चुम्बन ज्यों पंछी जाएं – मुस्काते झूले पे आए।
पुष्प हार ले मृत्यु आती – वंचित की वीणा है गाती।।
वन्दे कह सब भेंट चढ़ा दो।
आग बनो और आग लगा दो।

मैं आत्मा - तू - परमात्मा

जाऊँ कहाँ – तुझे पाऊँ कहाँ
बता दो पता – ओ मेरे पिता
(नर नारायण है – तू भगवान है)
मैं आत्मा – तू परमात्मा
जाऊँ कहाँ – तुझे पाऊँ कहाँ।

मैं अज्ञान हूँ – तू परम ज्ञान है
सोएं इंसान को – जगाये कोई
मन के सुरताल को – हिलाएं कोई
तेरी लीला का चर्चा – चारों धाम हैं
मैं अज्ञान हूँ – तू परम ज्ञान है.............
मैं आत्मा – तू – परमात्मा

मैं अंधियारा – तू उजियारा
मेरी अन्तर ज्योत – जलाए कोई
इस अन्धकार को – मिटाए कोई
तू ही है नाव – तू ही किनारा
मैं अंधियारा – तू उजियारा
मैं आत्मा – तू – परमात्मा

बता दो पता – ओ – मेरे पिता
जाऊँ कहाँ – तुझे पाऊँ कहाँ
मैं आत्मा – तू – परमात्मा।

युवक या रास्ता पा लेता है या रास्ता बना लेता है

दीप हूँ मैं दीप हूँ विजय का प्रतीक हूँ।

दीप हूँ मैं दीप हूँ विजय का प्रतीक हूँ।
उपासना के थाल में अर्चना का गीत हूँ
दीप हूँ मैं दीप हूँ प्रेम का संगीत हूँ।।

मैं सदा जलता रहा और तमस हरता रहा
क्रांति का आह्वान हूँ शांति का प्रतीक हूँ
दीप हूँ मैं दीप हूँ सत्य की मैं जीत हूँ।।

जल रहा मैं द्वार द्वार सात रंगो का मैं सार
वेदों की वाणी हूँ मैं ऋषियों का मैं गीत हूँ।
दीप हूँ मैं दीप हूँ सम्मान का प्रतीक हूँ।।

तप हूँ मैं त्याग हूँ समर्पण की आग हूँ।
कुटिया में झांकता प्रभात का मैं गीत हूँ
दीप हूँ, मैं दीप हूँ प्यार हूँ गीत हूँ।।

भारत का सम्मान हूँ राम की मैं आन हूँ
निर्वाण दयानन्द का सत्यार्थ का संगीत हूँ
दीप हूँ मैं दीप हूँ विजय का प्रतीक हूँ।।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

साजिशों के साए हमको मिटा न पाएँ
मजहबी जनों के शोले हम को जला न पाएँ
इंसानियत के मुजसिम हैं हिन्दवाले
मेरे राम को रावण हरा न पाएँ
देश का बटवारा भी साजिशें अन्जाम था
इन्द्रा का गुनागारा भी साजिशें अन्जाम था
काशमीर का नजारा भी साजिशें अन्जाम था
जलती थी जलेगी शमा बुझा न पाएँ – साजिशों के साए–

साजिशों को कब तक निशाना बनेंगें
बन के मिटे – मिट कर बनेगें
कुर्सियों की ख्वाहिशों ने पाला है साजिशो को
इस माफियों के हाथों बेमोल बिकते रहेगें
देखना फिर से यहाँ फिरंगी न आने पाएँ – साजिशों के साए–

दुश्मन की महफिलों के दिए बुझाए हमने
हैवानियत की आंधियों में दिए जलाए हमने
हम धर्म के पुजारी मजहबों से दूर हैं
इंसान के करीब हैं – शैतां से दूर हैं
पंचशील के सबक दुनियाँ को हैं सिखाएं – साजिशों के साए–

कुर्सियों की हवस को अब तो मिटाना होगा
जैचन्दी साजिशो से भारत बचाना होगा
भारत है भारतीय हैं सब को सिखाना होगा
किनारे पे आ चुकी कश्ती न डूब जाए–साजिशों के साए–

इन मास्टरों को अब गुरू में बदल डालो
पं. और मोलवियों को बन्दो में बदल डालो
इन लीडरों को लीडरी का फलसफा सिखा दो
और घूस के कैंसर से इस देश को बचा लो
द्रोपदी का चीर अब फिर न हरने पाए – साजिशों के साए–

बचा लो मौजूदा पीढ़ी को गुमराही से बचा लो
शुगर और शराब की सुराही से बचा लो
बचा लो इन्हें मगरबी बहारों से बचा लो
शुगर और शराब के नजारों से बचा लो
टिविस्ट और पोप की बहारों से बचा लो
दौलत यह देश की हरगिज न डगमगाएं – साजिशो के साए–

काशमीर और अयोध्या पर मजहबी तजारत मत करो
सत्य की करो बात – आपस में हकारत मत करो
मजहब के ठेकेदारों को नाकाम बना दो
मिल बैठकर चौपाल में सलीके से सुलझा लो
लल्ला के स्थान पर अब आचं न आने पाए
मजहबी जनों के शोले हम को जला न पाए – साजिशो के साए–

सुबह की तलाश

रोज सुबह होती है फिर भी सुबह की तलाश है

इंसान जिंदा तो हैं पर इसे जिन्दगी की तलाश है

मर मर के मरता है रोज फिर भी जिया जाता है

सहरा के कारवां को – शबनम की तलाश है

करके खून रेजियां ख्वाहिश है जनतों की

पहचानों बिना कफन सड़ रही किस किस की लाश है

तवारीख के पन्नो में झांको – पहचानों अपने अक्स को

इन बदनुमां चेहरों से हुआ शीशा पाश – पाश है

अन्धेरों में सवेरे सवेरों में अन्धेरे छुपे है

मुझे तो हर किरण में सात रंगो की तलाश है

रोज सुबह होती है फिर भी सुबह की तलाश है

लिबास तक ही महदूद था सफेद रंग
अब यह खूँ में भी आ गया है

यह गर्म खून क्यों कर अब सर्द हो गया है
चट्टान सा था वज्र क्यों गर्द हो गया है।

सुगन्धी भरा यह खून क्यों दुर्गन्ध हो गया है
इस देश की नैतिकता पर प्रतिबन्ध हो गया है।

इक–इक बूँद जिसकी स्वाभिमान में जड़ी थी
इक–इक बूँद जिसकी इतिहास की कड़ी थी

गौरव और स्वाभिमान की यह खून की कहानी
56 सालों में पिंघल कर क्यों बन गयी है पानी

इस खून की लाली के किस्से अब कहाँ हैं।
जहाँ से हम चले थे वहाँ के वहाँ है।

इस पीढ़ी का खून क्यों बदरंग हो गया है
स्यासी गोटियों में शतरंज हो गया है।

अब उठ अपने वलवलों का ज़ज़्बा दिखा दे
खून की रंगीनियों से इस देश को सजा दे

अब उठ लाली से लाल लिख दे चरित्रा का फसाना
उद्धम सिंह, भगत सिंह का आ जाए फिर जमाना।

इस खून की लाली का सिक्का फिर जमा दें
जुड़ों प्रजातन्त्र से इस देश को बचा लें

तूझे क्या हो गया है तुझे क्या हो गया है
सुगन्धी भरा यह खून क्यों दुर्गन्ध हो गया है
इस देश के नैतिकता पर प्रतिबन्ध हो गया है

ध्वज अर्चना

जब जब तुझे फहराया तेरी शान में खूने दरिया बहाया था

यह सुखे खून क्योंकर बदरंग हो गया है – स्यासी गोटियों में शतरंज हो गया है

यह रंगीन बस्तियां जो थी आज शमशान है शतरंज हो गया है

आजादी से पहले के लोग कहते हैं – सोने की चिडियां का सोना कहां है

गैरों ने हमें लूटा हम लुट नहीं पाए

गरीबी हटाने के मनसूबे बनाए

आन के मन्ज़र दिल थाम के देखो

चौराहे पे खड़े हैं हम हाथ फैलाए

पैबन्द लगे हैं और चाक गरीबां है – आजादी से ....

अब इस कारवां का रूख बदल डालो, जहां बदल रहा है यहां बदल डालो

यह शिकस्ता कस्ती किनारे लग तो सकती है

हवा के रूख पर चलो और बादवां बदल डालो

इंसान धर्म है – धर्म ही इंसान है– आजादी से ....

देश की कंगाली को बचाना होगा–

बदनुमां घूस का दाग मिटाना होगा '

हर गोशे में उत्पादन बढ़ाना होगा – गिरे हैं जो सिर उन्हें उठाना होगा

इस घर को घर के चिरागों ने जलाया है

किसको मिटाओंगे तुमने खुद को मिटाया है

पहचानों पहचानों कौन इंसान है कौन हैवान है

इंसान है, धर्म है–धर्म ही इंसान है

न हिन्दी न हिन्दू न हिन्दुस्तान है – इस सोने की चिड़िया........

मेरे इन गुलों को

मेरे इन गुलों को वतन की दासतां बता दो
मेरे इन गुलों को चमन के पासवां बना दो

सर हथेली पे रख जोहर दिखाते थे मुस्कराते थे
फांसियों को चूम लेते थे वन्दे मातरम् गाते थे

14000 रानियों को आओ आज प्रणाम कर लो
और जो गद्दारों कौम है उनके खूँ से जाम भर लो

अभिमन्यु बनो, हकीकत बनो, बनो बन्दा बैरागी
रचाओ कृष्ण की बाल लीला, कंस का काम तमाम कर दो

गुलों को चमन में मुसकराना सिखा दो
जन जनार्दन को गले लगाना सिखा दो

भटकों को राह दिखाना, गिरतों को उठाना
दुखियों को गले लगाना सिखा दो

गुरूओं के चरण छुआ करो
माता पिता से आर्शीवाद लिया करो

सीख लो इस देश की तहजीब को
पश्चिम को अलविदा कहना सीख लो

मेरे इन गुलों को वतन की दासतां बता दो

चुनाव

वोट का नोट से गला घोट दो–
सामदाम दंड भेद से
हर बैलट पर "पंचा" थोप दो।
यह नेताओं का फरमान है – मेरा देश महान है
घूस की हम ऐसी खांद बनाएंगें हर गावों को ग्रास रूट से उठाएगें
घर घर में टी.वी. लंगाएंगें परम्परागत नेताओं की गाथाएं सुनाऐंगे

भ्रष्टाचार तो प्रजातन्त्र की देन है।
हम पर्यावरण बचाएंगें पाल्यूशन हटायेंगें
माफिया को माफ करना धर्म है
गंगा मैया को साफ कराना हमारा कर्म है
यही तो इलैक्शन का प्रसाद है – नेताओं का वरदान है।
वोट का नोट से गला घोंट दो – मेरा भारत महान है।

सीमाओं की हर सीमा पर हम देश लुटाऐंगे
इस तरह इस देश का रंगीन गुलदस्ता बनाऐंगें
फूट के बोएंगें अंकुर

विपक्षी बोफरज़ तोप से खुद मिट जाऐंगें
तोप से न मिटें तो हम अग्नि चलाऐंगें।
यही इलैक्शन का प्रसाद है मेरा भारत महान है
वोट को नोट..................

दिल खोल कर चुनाव का बजट बनाओं
कोई कमी पड़े तो चीनी का भाव बढ़ाओं
कश्मीर में 370 नहीं हटाऐंगें
तुष्टीकरण की आड़ में हम वोट पाऐंगें
15 अगस्त नहीं तो 14 अगस्त मनाऐंगें
यही इलैक्शन का वरदान है – मेरा भारत महान है।
नोट का वोट से ....

पंजाबियों को इस बार बसा चुके हैं–
यह शरणार्थी मुआवजा भी खा चुके हैं।
आंतक से पंचाब खाली मत करो
मरते रहो पर आतंकवाद से मत डरो

दीपावली

असतो मा सदगम्य - तमसो मा ज्योतिर्गमय

घर – घर दीप जला डालो
तमस ही तमस है मिटा डालो
सत्यार्थ का फैले प्रकाश
चमके धरती और आकाश
अज्ञान अविद्या मिटा डालो
तमस ही तमस है मिटा डालो

हर दीप में झलक राम की है
हर दीप में ज्योत निर्वाण की है
कुछ ऐसे दीप जला डालो
सब भेद – भाव मिटा डालो
विश्व को आर्य बना डालो
तमस ही तमस है मिटा डालो

गली – गली में गुरूकुल होवें
संस्कृत बोली जाए
जन्में पुत्र राम लखन से
सीता पूजी जाएं
रावण कंस मिटा डालो
तमस ही तमस है मिटा डालो

कुल परिवार का हो कल्याण
विद्वान विदुषी का निर्माण
हर्ष उल्लास का यह त्यौहार
सुखी रहे हमारे परिवार
प्रभुवर से आनन्द पालो
घर घर दीप जला डालो
तमस ही तमस है मिटा डालो

दीपावली

निर्वाण दिवस की शुभ बेला में,
आँगन आँगन दीप जले।

भारत के हर ग्राम नगर में
सत्य की ज्योति जलें

सत्यार्थ का प्रकाश हो,
वेद ध्वजा फहराएं।

गली गली में गुरूकुल होवें,
संस्कृत बोली जाए।

विदुषीयों का हो विपुल निर्माण,
तभी होगा विश्व का कल्याण।

दीप से दीप जलें अनन्त,
न रहे अविद्या और अज्ञान।

पुत्र राम से जन्में घर–घर,
आर्य बने यह संसार।

मानव कल्याण से पनपे,
सदाचार, प्यार और परोपकार।

हर्ष उल्लास से मनाओं यह पुनीत त्यौहार,
सुख समृद्धि से हो भरपूर भारत भर का परिवार

उदार भारत

क्या चक्रवर्ती होने का मैंने अभिमान किया है,
स्वयं पिया विष जग को अमृत पान दिया है।

क्या किसी को हिन्दू करने को नर संहार किया है
भाले के नीचे पड़े सिकन्दर को मुक्ति दान दिया है।
स्वयं पिया विष जग को अमृत पान दिया है।

सर्वे भवन्तु का चातक जीता हूँ जीने देता हूँ
जो भी शरण में आया–उसको सम्मान दिया है।
स्वयं पिया विष जग को अमृत पान दिया है।

पूजा स्थल का रखवाला नारी का मान किया है।
धर्म शंख का नाद बजा – दुष्टों का नाश किया है।
स्वयं पिया विष जग को अमृत पान दिया है।

मैं हिन्दू सम्पूर्ण सिन्धु – व्यापक मेरा वैदिक ज्ञान
मानवता का दर्पण–अर्पण गीता ज्ञान दिया है।
स्वयं पिया विष जग को अमृत पान दिया है।

पूजा स्थल का रखवाला नारी का मान किया है।
धर्म शंख का नाद बजा – दुष्टों का नाश किया है।
स्वयं पिया विष जग को अमृत पान दिया है।

इक युग बीत गया

इक युग बीत गया
मीठी कड़वी यादें देकर – इक युग बीत गया।

घट–घट घटी ऐसी घटनाऐं
सरल प्रश्न, जटिल बाधाऐं
कभी वन में जुगनु सा चमका
कभी मन्दिर में जला दीप सा

कभी हारा कभी जीत गया – इक युग बीत गया।
मीठी कड़वी यादें देकर।

कितने छोर छुट गए
नाते रिश्ते टूट गए
पालने से धरती पर आया
अब आकाश भी छू लेता हूँ

हारा अतीत – भविष्य जीत गया – इक युग बीत गया।
मीठी कड़वी यादें देकर।

कभी बंधन कभी प्यार हुआ
सपना कभी साकार हुआ।
क्षणिक क्षणों का क्षणिक सा चित्रण
धूमल–धूमल सा इक दर्पण

हारा जीवन काल जीत गया इक युग बीत गया।
मीठी कड़वी यादें देकर।

भोर सांझ में सांझ रात में
पूनम बनी है मस्या काली
सूखे पत्ते पेड़ों ने झाड़े
बटुर बटुर कर फेंके माली

हारी माँ की कोख–मरघट जीत गया – इक युग बीत गया।
जीवन हारा काल जीत गया
इक युग बीत गया – मीठी कड़वी यादें देकर।

कौन हूँ मैं कौन हूँ

मैं कौन हूँ वह जानने गुरूवर तेरे दर पे आया हूँ
शिव का सच्चा स्वरूप बताओ तेरे दर पे आया हूँ
दर दर की छानी राख, मैं क्या वह क्या है
कहाँ छिपा रचियता – यह जानने आया हूँ।

मूल समझने आए हो – मूल शंकर तुम आ जाओ
मैं ढूंढ़ रहा था – कहाँ छुपे थे दयानन्द तुम आ जाओ
विरजानन्द और दयानन्द का अद्भुत मेल हुआ
भारत के भाग्य बदलने को उत्कृष्ट यह खेल हुआ

सागर ज्ञान का विरजानन्द ने – दयानन्द पे उड़ेल दिया
व्रतधारी, ब्रह्मचारी ने श्रुति से सब समेट लिया
लौंग लेकर क्या करूँ – दयानन्द तेरा जीवन चाहिए
इस देश की बगिया सूख रही – मुझे माली चाहिए

ओ३म पताका लहराने निकल पड़ा वह व्रतधारी
विरजानन्द के बन चक्षु निकल पड़ा वह ब्रह्मचारी
पारंगित सब विंद्याओं में मूल ने मूल समझ डाला
भगवा वेश हाथ कमडंल पाखंड़ों को ललकारा
आओ देखें दयानन्द ने क्या से क्या कर डाला
जग को सत्य बताने को सत्यार्थ लिख डाला
तर्कों से पाखंडों का महल गिरा डाला

विद्या बिन ज्ञान नहीं होता सबको समझा डाला
कितने ही मुन्शी रामों को श्रद्धानन्द बना डाला
योग की धारा से उसने विष के प्याले धो डाले
तर्क से सत्य बचा डाला– झूठे मन्दिर, मिनार फोड़ डाले
सदियों से गुलाम पड़ा देश फिर से जगा डाला
सती, दहेज, विधवा के शोषण को मिटा डालो

ओ गंगे

ओ गंगे तेरी लहरों का सन्देश लिए जाता हूँ।
वायु के इन झोंकों का मैं वेग लिए जाता हूँ।

लालिमा से भोर की मैं तेज लिए जाता हूँ।
परिवर्तन का प्रकृति से आदेश लिए जाता हूँ।

शांति की वह सहनशीलता, पतझड़ की वह आशा।
मौन खड़े इन वृक्षों की ऋतुराज की आशा।

यह जीवन भी इक तीर्थ हो, सद्भावों का यह घाट बने।
ज्वलित हुई है यज्ञ की ज्वाला, जीवन इसका भाग बने।

हरियावल सी छा जाए जब जीवन का प्रवाह बहे।
खूँ के आंसू रो पड़ो जब दुखियां कोई आह भरे।

मौन में उन गिरियों ने, न गिरने का संकेत किया।
तप – ताप रहे इन गिरयों सम, तूफान सहे जाता हूँ......

झक झोर सुमन खिला दिए, यूं जीवन को है भेंट किया।
पग से रौंदी शबनम ने, यू मन को है सचेत किया।

जिन्दगी

राहों पर दोराहों पर चौराहों पर चली जाती है जिन्दगी
सहलाती, रूलाती – हंसाती चली जाती है जिन्दगी

तड़पती सिसकती खिलखिलाती मुस्कुराती यह जिन्दगी
भागती–गिरती–संभलती रूक के खड़ी हो जाती यह जिन्दगी

कभी प्यार कभी फटकार सपना कभी साकार हो जाती यह जिन्दगी
कभी मेहर कभी कहर जगाती किसी को सुलाती यह जिन्दगी

लिशकार कभी चमत्कार रात सी प्रभात सी नजर आती यह जिन्दगी
कभी क्षमा कभी दण्ड सी कभी देव कभी प्रचण्ड सी

मुस्कान सी शैतान सी इंसान कभी हैवान सी नजर आती यह जिन्दगी
कभी अपनी कभी पराई कभी लेती कभी देती

धार कभी मंझधार किनारों पे खड़ी निहार सी यह जिन्दगी
कभी हैरत कभी खौफ सी जीवन कभी मौत सी यह जिन्दगी

अपनी मति से अपनी गति से निर्धारित दिशा में चली जाती यह जिन्दगी
राहों पर दोराहों पर चौराहों पर चली जाती है जिन्दगी

वेद प्रकाश आर्य

झूठ के खंजर हैं हम सच की तलवार नहीं हैं

इस ध्वज को फहराने के हम हकदार नहीं हैं
झूठ के खंजर हैं हम सच की तलवार नहीं हैं।

ये आन है वतन की ये शान है वतन की
हम इस पे हो निसार इतने दिलदार नहीं हैं।

खुद बिके हुए हैं देश को बेचना चाहते हैं
गद्दारे वतन हैं इस देश से हमें प्यार नहीं हैं।

आजादीय वतन, लाखों शहीदों का खून है जनून है
जयचन्दी चेहरे हैं हम शिवा या प्रताप नहीं हैं।

बचालों आजादीये वतन बड़ी मुश्किल से पाई हैं
गुजर गये पचास साल फिर भी बेदार नहीं हैं।

कटा के जटायें गुरूओं ने वोटों के मुकुट पहन लिये हैं।
डुबों के किश्तियें वतन रहनुमा हैं गुनाहगार नहीं है।

झूठ के खंजर है हम सच की तलवार नहीं हैं
लम्बी तान के सोये हैं हम बेदार नहीं हैं।

ये पीठ में दागेंगे खंजर वफादार नहीं हैं
जयचन्दी चेहरे हैं हम शिवा या प्रताप नहीं हैं।

पतंग

जीवन की यह हरी पतंग ऊंची ऊंची जाए।

सम्भल सम्भल कर डोरी छोड़ो, कहीं न कट गिर जाए।।

पेच पड़त है पग पग तेरे, संयम खो कट जाए।

संयम से है जीवन तेरा, इस बिन है मर जाए।।

ढील न देना और इसे तू–देख घटाएं आईं।

खो बैठेगा भूल से – वे इसे डुलाने आईं।

कारीगर ने इसे बनाया देख न ये फट जाए।।

वायु के हर झोंके में है – अवसर चूक न जाना।

कच्चे धागों से क्या उड़ेगी, पक्की डोर उड़ाना।

जीवन पथ है कठिन डगरिया – ठोकर से गिर जाए।।

जीवन की यह हरी पतंग ऊंची ऊंची जाए।

बूँद

धीमा सा यह शोर है कैसा,
बिजली, तू भी कूंद।
टप – टप देखो टपक रही है,
पानी की इक बूँद।।

पत्थर में भी छेद किया,
यह कितना तीखा वार।
गिर–गिर कर फिर गिरती है,
हर वार पे फिर इक वार।
नन्हीं सी छत फाड़ दिया,
यूँ टपक पड़ी पानी की बूँद।।

नन्हीं सी वह बूँद नहीं,
उस बूँद में भी इक तूफान है।
झरनों की वह झर – झर है,
सागर की वह शाँ – शाँ है।।

लहरों की हर लहरों में,
बस छिपी पड़ी पानी की बूँद।
धीमा सा यह शोर है कैसा,
बिजली तू भी कूंद।।

एक अपराधी का संतोष

शायद मेरे कारण उसने अपराध किया होगा।
झोपड़ पट्टी में घुट-घुट कर कुछ रोज जिया होगा।।

निराशाओं को आशाओं में मुझे बदलना ही होगा।
एक बार ही करूँ अपराध यह संकल्प किया होगा।।

काले फोटो ने वोटो की बात करी होगी।
जामिन न मिलने पर कितनी मार पड़ी होगी।।

झोपड़ पट्टी में छिपा आया हूँ – मिल जाएगा सारा माल।
दो साल ये कट जाऐंगें हो जाऊँगा माला माल।।

जेल है अपराधियों का खेल, तू काहे घबराता है।
हथकडियां आभूषण है तू काहे शरमाता है।।

यह तीर्थ है – जो आता है जाता है – फिर लौट आता है।
दोषी ने र्निदोषी को दोषी ने दोषी ठहराया।।

तुम नेक अपराधी हो – तुम्हें छः माह पहले छोड़ दिया।
तुम नेक हो, नेक बने रहना जेलर ने उपदेश दिया।।

दौड़ा झोपड़ पट्टी की ओर अपने सभी सपने सजाने।
कितनी स्कीमें बना रखी थी उसने साकार होगें सभी सपने चलो खुशियाँ मनाने।।

झोपड़ पट्टी कहाँ? यहाँ सात मंजिली इमारत खड़ी है।
इस समाज ने फिर मेरे साथ तिजारत करी है।।

वाह रे समाज! सब कुछ ले लिया मुझे दे दिया कारागार।
अपराधी केवल अपराधी बन, जीने का अब मुझे रहा अधिकार।

हे कारागार – थोड़ा ही इन्तजार, मैं आऊँगा बारम्बार।
नेक अनेक अपराधियों का तू ही तो कर पाता है बेड़ा पार।।

टूटते रहेंगें सहारे तू ही रहेगा हम जैसो का तीर्थ स्थान।
उस बारम्बार अवाधता में भी, मेरा होगा एक स्वाभिमान।।

नव-सम्वत्सर

नव–सम्वत्सर

नये वर्ष पर आज तुम्हारा,

हम अभिनन्दन करते हैं

गीत–प्रसूनों की यह माला

तुमको अर्पण करते हैं ।। 2 ।।

नव–सम्वत्सर शुभारम्भ है

नवल चेतना विहान है

पृथ्वी माँ का जन्म–दिवस है

नव–दुर्गा का प्रथम मान हैं ।। 2 ।।

विक्रमादित्य ने आज राष्ट्र को

स्वतन्त्रता दिलवाई थी,

यह आजादी की चिन्गारी

अन्तरतम से आई थी ।। 3 ।।

कालों की गणना ब्रह्मा ने

इसी दिवस से शुरू कराई

जन्म दिवस ऋषि दयानन्द का

जिसने वैदिक ज्योति जलाई।

ओ३म् ओ३म्

केन्द्र एवं गुरुकुल के संरक्षक स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

समाज एवं राष्ट्र का प्रहरी कौन?
सत्ता एवं समाज के सहयोग का उत्कृष्ट पात्र कौन?

द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल

विदुषी एवं वीरागंना निर्माण केन्द्र

Immortality Through Knowledge

MANAV KALYAN KENDRA

Dronsthali Arsh Kanya Gurukul

35-A, Kishanpur, Post Rajpur, Dehra Dun-248 001
Ph. : 91-135-2734569, 2734579, 2733268
e-mail : info@thearyanschool.net

The plight of girl child in India's remote, tribal and many rural areas is well known. They have to struggle even for their basic survival.

Our aim is to provide a healthy environment and the necessary education and development facilities to transform them into Vidhushi Virangnas. They are taught Sanskrit, Six Shastras, Vedas and Vedang, in addition to teaching them modern subjects. They are trained to become fearless Virangnas leaning Yogasanas, lathi, Sward wielding, Shooting, Horse-Riding, Parasailing, Karate etc.

Bramcharni Dr. Anapurna, M.A., Ph.D. is the Acharya of the Gurukul. A highly respected, simple, un-assuming Scholarly Mahila (Lady). She has taken a vow of celebacy to devote her entire energy to the development of the Brahmcharnies and spreading Vedic knowledge through them. Brahmcharnies too adore her.

In discharging Social responsibility towards the girl child the institution has to spend atleast Rs. 1000/- per child per month for their boarding, lodging and studies. Presently there are 80 Girls, most of them from deprived families are getting educated in the Gurukul. They are required to stay in the Gurukul for 8-10 years to attain the desired standard of Vedic Education leading to degree of Shashtri (B.A.), Acharya (M.A.) And Ph.D.

We trust you would like to support education and development of atleast one such girl child. You can do so by donating Rs. 1000/- Per month per child or Part Finance, their boarding, lodging and education by subscribing Rs. 600/- or even Rs. 300/- per month as per your convenience.

"Hand that helps is holier than the lips that pray."